





श्रीकृष्णकोदये ॥ अथमिहोचनविधिलिख्यते ॥ आशौचं
गार्चनं कृत्वा ॥ स्नानादिचन्दनसिन्दुरं अक्षतं ॥ आचमनं
॥ उगसं ॥ अगगसं ॥ ततोऽर्घ्यपात्रपूजा ॥ हृदि उवादि
षडंगपूजा ॥ ध्येत्तुमुद्रांश्च येन ॥ आत्मसिचनं ॥ आत्मा
पूजा ॥ आत्मोचनं नमः ॥ आत्मनेपुष्यं नमः ॥ सूर्य
पूजा ॥ इन्द्रोऽसौ श्रीसूर्योऽयं नमः ॥ ३ ॥ राजा देविसगतिरसि
हिताय नमः ॥ वलि ॥ श्रीसूर्योऽयं वलिगृध्रं स्वाहा ॥
श्रीनारायणपूजा ॥ इति सप्तमो नारायणनायकनमः ॥ ३ ॥
लक्ष्मीदेविसगतिरसिहिताय नमः ॥ वलि ॥ श्रीनारा
यणाय वलिगृध्रं स्वाहा ॥ श्रीमहादेवपूजा ॥ इति

सप्तदशसिवाय नमः ॥ ३ ॥ स्वसगतिरसिहिताय नमः ॥
वलि ॥ श्रीसप्तसिवाय वलिगृध्रं स्वाहा ॥ श्रीगौरी
देविपूजा ॥ श्रीगौरीदेवे नमः ॥ ३ ॥ वलि ॥ श्रीगौरीदेवे
वलिगृध्रं स्वाहा ॥ श्रीगणेशपूजा ॥ गणेशाय नमः
नमः ॥ वलि ॥ गणेशाय वलिगृध्रं स्वाहा ॥ धूप
नैव संदद्यात् ॥ जथासं कल्पं कृत्वा ॥ जप ॥ सीत
वोदः ॥ जवा ॥ यस्य ॥ नमः ॥ सर्वमंगलं ॥ देवेभ्यः
लिगार्चनविधौ तत्सर्वं परिपूर्णमस्तु ॥ नमस्तस्मात् ॥
त्वा सन्दत्ते सितपुष्पं भयं ॥ न्यासेन विसर्जनं कारय
त ॥ आचमनं ॥ ३ ॥ इति लिगार्चनपूजाविधिः

ततो नित्या च न ॥ स्नान गंगा धा सरि मे दृ नाना पाप पुना
सर्न पुऽ कृत पाप युगता नो स्ना नाथ मे सु धो वता ॥
चंदन ॥ इड मलय सै भुते च दू नै ही म सी तल वि
जा हो च वि हे न गृ हान न म सि द्धे ॥ सिं धु ना पु र्द न
दे व स्प ला द न वि भु व न ॥ गृ हान वि र्वी रे सी सि नु
र व गी डा य कै ॥ अ द्योत ॥ अ द्योत सर्व वी रे स वि
र भा व वा प्र दे ॥ सर्व मे ग ल दा य कै गृ हान पार मे
श्वी ॥ पु ष्य ॥ नाना पु ष्य सु गं चा ति मा ल त्पा
कु स मो द यो सो भा ण प सि दि द्द भ डे पु ष्या रे ह न
पु ष्य ॥ मा ल को आ स र वो ये ॥ आ च मे ल ॥

चंदनो द्युत पु ष्य जलं धृ त्वा सु र्यो ध ॥ हा डी स
श्री सु ज्यो य अ ध न म स्वा हा ॥ पु ष्य न म ॥ अ
ध स लं व न ये ॥ म नु ल गृ ह न म स्का र वा य ॥ श्री
गृ ह्मे न म अ वं द म ला का र वो ना स्वा क या र्वा
दु ये ॥ उ व या के य आ स न त ये ॥ श्री कृ जि का स ना
य पा पु ज ॥ व लि ॥ प म्ना स ना य पा पु ज ॥ पा त्र स ॥
पा त्रा स ना य पा पु ज ॥ थ व त ॥ कु म्मा स ना य पा पु ॥
जा की ज व व र ति न्ये ॥ ह स्ना य फ त ॥ पृ ज र मु द्रान
र वा ल स वृ को न वो ये ॥ हे डु फ त व ज र पं ज ले स्वा
हा ॥ द स द्वा र व ध न ४ च ल म कु ले कु ल म च ले

ही हु फत्तस्वाहा ॥ अथ प्राना यन्यास ॥ ततो जलपा
 त्रपुजा ॥ लंबनं च ते ॥ जम्बु जलपात्रपापुजा ॥ ह्रीद्या
 दिपुजा ॥ आवाहनादि- ॥ चंडनाक्षतपुष्पपापु
 जा ॥ चेतुमंदा ॥ कुजिका ॥ ये विग्रहे कुलद्रो
 प्रायेधिमाहि तनो कुजिप्र चंदयात ॥ अतल्लव
 नुदेवयाक्ये यवके हंहा याये ॥ अथ अर्घ्य
 संपुजाविधिर्ध्ये ॥ यनाति यमसिद्धिसाधना ॥
 ततोर्ध्वपात्रपुजाविधिर्ध्ये ॥ भुजगुचीविधिर्ध्ये
 ॥ जात्मापुजाविधिर्ध्ये ॥ यवसिरसगुरुतपवि
 धिर्ध्ये ॥ यवसिरसात्रि योजनितये ॥ ह्रीं श्री-

इत्युक्त्वा ॥ आन सगति भैरवा मंदवीराधि
 पते ॥ श्रीमहाविद्याय नमः ॥ श्री
 पापु ॥ ३ ॥ लम्बु ॥ तत तप च वल्लिविये ॥ मयु
 रासनाय पापु ॥ ४ ॥ श्री कुलपुत्रवतु कताथा
 यवलिगु ध्रु २ स्वाहा ॥ नरासनाय पापुजा ॥
 द्वा दशाक्षं द्वात्रिपालाये वलिगु ध्रु २ स्वाहा
 ॥ सिंहासनपापु ॥ यौ सर्वयोगीनि भवो व
 लिगु ध्रु २ स्वाहा ॥ प्रेतासनाय पापु ॥ ५ ॥
 सिद्धि चामुद्राय वलिगु ध्रु २ स्वाहा ॥ मुखसना
 यपापु ॥ गौरीगु गंतो श्री कुलगणेशाय व

लिङ्गं च स्वाहा ४ तर्जो हिन्दु यो न काङ्क्षति
मुद्रा उर्येन ४ विन्दुविय ४ इति पंचवलि
॥ आवाहन ४

श्री आदिदेव पापु ४ इति नैवद्य बलिङ्गं च स्वाहा ४
ततः श्रीभिदेव पुजा ४ नरासनाय पापु ४ शौक्षी
व्येत्रपालाय पापु ४ ४ बलि ४ मयुरासनाय पा
पु ४ श्रीकुलपुत्रवतुकनाथाय पापु ४ ४ मुखा
सनाय पापु ४ गांगीपुगगलो श्रीकुलगणेश्व
राय पापु ४ ४ बलि ४ दन्द तर्जो गजमुद्रा
विन्दु ॥ ततः श्रीत्रिसुधिपुजा ॥ पद्मास

नाय पापु ॥ स्वगुरु श्रीसुखीसा नन्ददेव पापु
॥ परमगुरु श्रीचरणो नन्ददेव पापु ॥ परमेश्वर
गुरु श्रीमित्रानन्ददेव पापु ॥ ४ यथा ॥ लिङ्ग
श्रीत्रिसुलिभदरकाय पापु ॥ ३ ॥ बलि ॥
॥ च्युतमुद्रा ॥ विन्दु ॥ ततः श्रीनवात्मा
पुजा ४ इति ॥ द्विष्ट्रहस्ताय फल पापु ॥
कनिष्ठाभ्यां नमः ४ तर्जो नैव्याह्वाहा ४ मध्ये
माभ्यां वयतः ४ अनामिकाभ्यां हुं ४ ये कनि
ष्ठाभ्यां वीरतः ॥ हुं करतलं पृष्ठाभ्यां हस्ताय फ
लं ॥ हिंयादि अंगुष्ठस्य ॥ इति नवात्मानपा

७॥ सैसिर स्काने पापु ॥ कैललाने पापु ॥ भव
 कायपापु ॥ लेही दयाय पापु ॥ बना मो पापु ॥
 गुहे पापु ॥ यजानो पापु ॥ उपादधुये पापु ॥
 रंति न्यास ॥ आसन ॥ आधारसकतये पापु ॥
 अनकासनाय पापु ॥ स्कन्दाय पापु ॥ नाराय
 पापु ॥ पद्माय पापु ॥ पत्राय पापु ॥ केसर
 यपापु ॥ कारिकाय पापु ॥ पद्मासनाय पापु
 ॥ सवासनाय पापु ॥ ध्यान ॥ पद्मासनसब
 स्कन्धसब कंचुला चन ॥ खवन चमहादि
 पंसर्वे रक्षनसे युत ॥ खवन पु च कंक चदधि

नेक ह्म सो भित ॥ उकरे पितवर्न स्पा कहु
 रकधि ॥ रक स्प दधिने धुमु सेतमकु
 वव ॥ तउ द्व पीतवर्न ह् पीत स्प क ह्म दने
 वि ॥

अस्मादह भुजं देव कव आहार भुवि ॥ खडा
 फेत के चरे डे वं नि सुल मरु सेत था ॥ सुतं कमन
 लं स्पेष्ट तुमरव द्वाग मेव च ॥ वान धर सु सं युग
 तं देव सुडा ना मु र से भित ॥ चक येव गडा पानि वर
 ॥ भय हस्त के ॥ का आ वि डे धां डे वं नाना लं कार
 मरि ती ॥ सब पितं भवे द्वा मा स ते सुख सै फा ॥

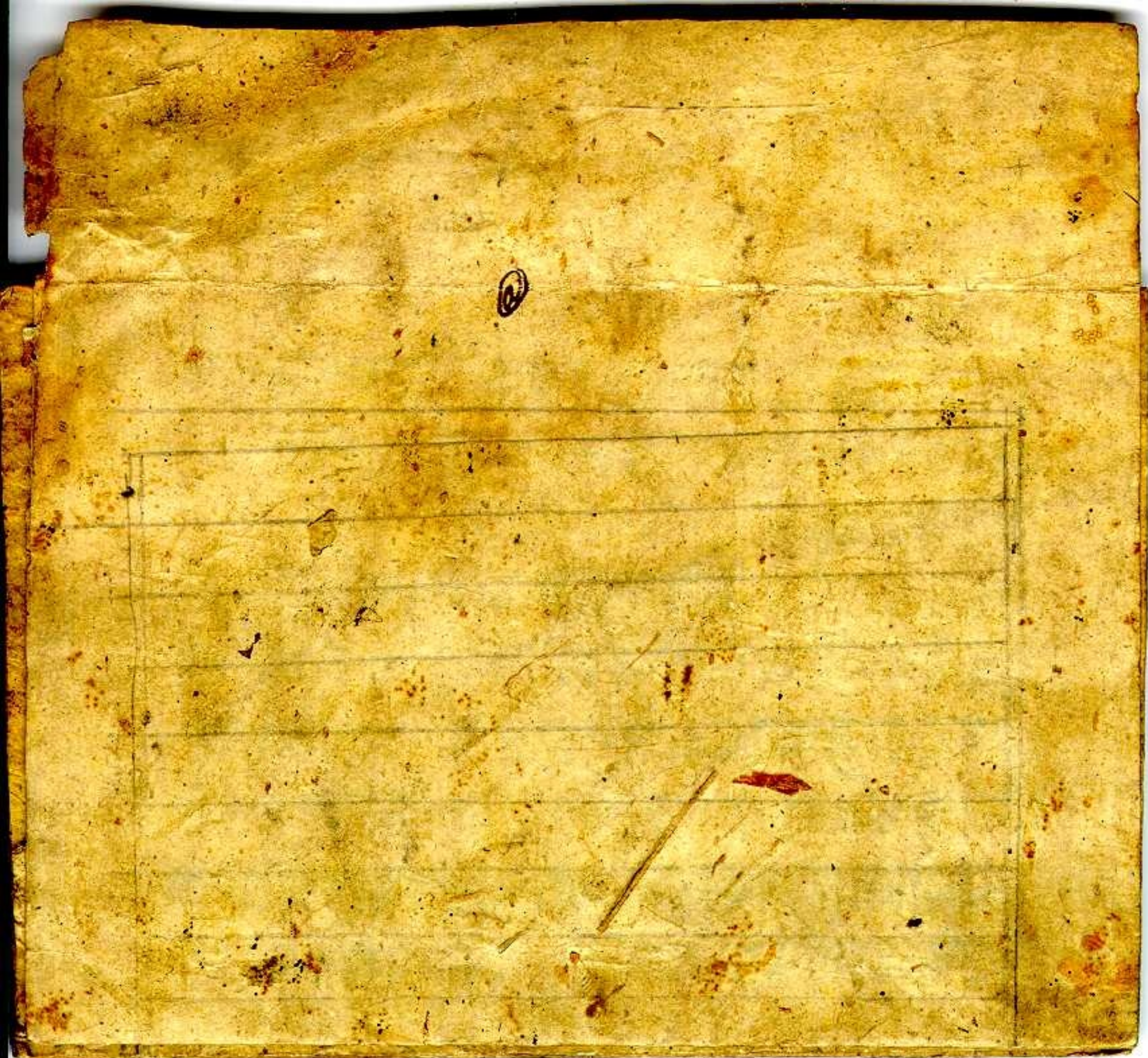
कारिनिजे सुधी पापु ॥ बलि ॥ भगवति हस
फे कजिकाये हाही हा धोरे अघोरे अघो
॥ सुधी धोही की नी की नी विचे पापु ॥ बलि
॥ ६८ सट की नवात्मा अडारकाय २८ नैव
अवालि गृध्र २ स्वाहा ॥ त्रिमुल योगी पंचम
हमुद्रां डसे येत ॥ विन्दु ॥ इति नवात्मा पुजा
॥ तत श्रीगुरुपति पुजा ॥ पद्मासनाय पापु ॥
६८ श्रीगुरुपति अडारकाय पापु ॥ ३ बाली
॥ ध्येनुमुद्रा ॥ विन्दु ॥ तत श्रीजे सधी

पुजा ॥ सवासनाय पापु ॥ ६८ श्रीजे सधी
क्रमभट्टारकाये पापु ॥ बलि महामुद्रा ॥ विन्दु ॥
तत श्रीकथ पुजा ॥ धृषासनाय पापु ॥ सिंह
सनाय पापु ॥ ६८ आनंदसगति भैरवानंद
विराधिपतये नमः श्रीकथनाथ स्वसहिताय
पापु ॥ ३ ॥ बलि ॥ त्रिमुल योगी मुद्रा ॥ विन्दु
॥ तत श्रीमातृका पुजा ॥ हस्तासन पापु ॥
अघोरे अमोख वरदेवि मले अश्रीवस्तानि
विचे पापु ॥ वसवेदा ॥ धृषासनाय पापु

॥ कं नाहे त्वारि ॥ न ह्यु रासनाय पापु ॥ न
को मारि ॥ ग हदास न पापु ॥ तं श्री वैष्णवि ॥
महिषासनाय पापु ॥ तं वाराहि ॥ गजासनाय
पापु ॥ यै रदायति ॥ प्रेतासनपापु ॥ यै श्रीचा
मुद्रा ॥ सिंहासनपापु ॥ समहलक्ष्मी ॥ अ
धारे श्रीमोक्षेवदेविमले श्रीमान्द्रुकाय नमो
बालिग ॥ धर स्वाहा ॥ परमत्रिसुल सगति सैव
कोल छत्रकाय धरा मुद्रा दर्शयेत् ॥ विष्णु ॥
तत श्री भगवति पुजा ॥ पद्मासनाय पापु ॥

सिंहासनाय पापु ॥ महिषासनाय पापु ॥ -
मुंभासनपापु ॥ तिसुभासनपापु ॥ अंही राज
प्रदेष्टु उग्रचने ॥ मुमड निद्रिई सदरक्षर
त्वामं यैस मृत्फ हरे नम ॥ स्वाहा पापु ॥ बालि ॥
योनिमुद्रा ॥ विष्णु ॥ खदग पुजा उग्र चंदी पु
जाये ॥ तत श्री वागीश्वर पुजा ॥ पद्मासन पा
पु ॥ रिक्किटी पिक्किटी कर कुनवागी श्वरि
वृधमहा कर्षिका विचे पापु ॥ बलि ॥ यो
निमुद्रा ॥ विष्णु ॥ तत श्री क्रम पुजा ॥ आसन
॥ आधारादि ॥ पंचप्रेतासनाय पापु ॥





बंनदिप्रेतासनायपापु ॥ बृवासनायपापु ॥ सिं
हासनायपापु ॥ सवासनायपापु ॥ ध्यान ॥

निलपंचक्षुरो

द्विनक्षत्रवर्षे देसियोरत्नसंपत्तिकचचित्तं ॥ वं
सादितां भोषकता च शतिभेरव ॥ कंथालला
टव्या प्रांसुकांचिकतिसुहास्पवान ॥ विचसुल
चकध्रुजाडानचददावाहुभि ॥ पारिजातं ज
प्यमाला पुस्तकां भयकोरे ॥ अङ्गवाह दयात्पा
चकचर्मा नृतविग्नह ॥ देवो नृतस्मसान चसड

वसधितानवानिलाचनक्रम प्रव्याकृजिरुपामहो
दराबडग ध्रादसभुतासर्वो थीर चवित्तं मुद्रमाला
धरागोरिदिष्टाकालकानना ॥ अष्टाडसावका
येविसर्वलोकसिरोरुहा ॥ व्याधुचर्मपरिधाना
सिद्धचक्रोद्यका ॥ दिव्यावरभुषांगी जयदिहा
स्पनि ॥ लततत्पापीतजलकगत उत्तरस्यामसनिभ
दधीनेकस्वरनीचयत्वात्समुखाप्रदक्षितं ॥
पुर्ववगतं भवेत्तगतमिसजंस्तुतिकोपमं ॥ सह
स्तमुज्यसंकासमुद्रवगतं पराचितं ॥ सर्वदिष्टा

करा लानि वत्कतानी कतानि संस्तु ॥ अथानि
स्या प्रवक्ष्यामि कुजिका येमहे स्ती च ॥ दक्षिणे च
॥ बोधे नवामे चैव विरानथा ॥ त्रिसुलं च कावर
उति अकुं संसरकं वृके ॥ उच्चने वामरो उजाति
लो ज संसाराकं ॥ ओऽ च मे द्रुल व द्वा गार्ध ठा पुष्प
क धनुश्च था ॥ कपालं वामत्ये पोकां सिंहास
न सवासता ॥ श्री अष्टाविसगति क्रमसि वसग
ति भवो ध्यान पुष्प पापु ॥ आवाहनं ॥ श्री अष्ट
विसगति क्रमसि वसगति इहा गद्य तं रत्नादि

अवगुठनं ॥ पंचमहसुद्रा ॥ पात्रादि उपचार
पुजा ॥ हृत् सट यत पात्रे श्री अष्टाविसगति
क्रमसि वसगति भवो नमः ॥ ४ हृत् सट श्री अष्टा
विसाकि क्रमसि वसगति भवो वंदन नमः ॥ इत्या
दि पूर्व वत ॥ वृथा जति ॥ श्री श्री ५ पहस्फे हृत् आ
नन्द सगति मेखानन्द विराधि वत ये सट श्री
माहाविजारा ज्येष्ठरि श्री अष्टाविसगति क्रमसि
वसगति भतारक यत्रिया जति पुष्प पापु ॥ ३ ॥

२३ नैषधवालिगृध्र २ स्वाहा ॥ अघोरवालि श्रीः
पूर्वतपुजा ॥ सट्ट हट्ट श्री अघोर विसति क्रमसि
वसागति भतारकाय २३ नैषधवालिगृध्र २ स्वाहा
॥ पंचमहामुद्रा ॥ विन्दु ॥ रति श्रीक्रमपुजा ॥
क्रमवायठपुजा श्रीक्रमपुजा अये ॥ तत श्रीचूर्ण
न्दपुजा ॥ पञ्चमासनायपापु ॥ प्रेतासनायपापु
॥ सट्ट श्रीसुदुर्घन्दमात्रुयक्रमसंदुत्रिषेन्दुभ
दारकायपापु ॥ ३ ॥ बलि ॥ चूर्णन्दमुद्रा ॥ विन्दु ॥
तत श्रीसिखास्वच्छन्दपुजा ॥ वृषासनायपापु

॥ श्री ५६ श्रीमद्गुरु श्रीसिखाचछन्दमैरवाय
पापु ॥ बलि ॥ ३ ॥ चूर्णमुद्रा ॥ विन्दु ॥
तत श्रीमुलसखानपुजा ॥ आस ॥ सुदुर्घ
कैमहृष्टायफल ॥ अघोरे, हा अगुष्टा आन
म ॥ अघोरे, हा तर्जनि भ्यां स्वाहा ॥ घोरघोर
करेद्रुफेमध्यमा भ्यां वीवात ॥ सर्वात सर्वत स
चे अनाभिका भ्यां हुं ॥ हुं सुठ फिनि वा भ्यां वी
वात ॥ सुदुर्घपेकठ करतरतन युद्धा भ्यां हुला
यफल ॥ यव अंग न्यास ॥ अललाते पापु ॥
इकठ पापु ॥ ३ ॥ सुखे पापु ॥ योगुष्ट पापु ॥ जव

पाद द्वयपाप ॥ शतविजय चक्र्यास ॥ आसन
॥ आचारादि ८ चंद्रमंडलाये पाप ॥ चंद्रम
दलाधिपतये व्रतप्रेतासनाय पाप ॥ सुजनि
राउलाय पाप ॥ अधीनिमै राउलाय पाप ॥ अ
ग्नी मद्रुलाधिपतये रुद्रप्रेतासनाय पाप ॥ सोम
राउलाय पाप ॥ सोमराउलाधिपतये इश्वर
प्रेतासनाय पाप ॥ लग्नाग्नी मद्रुलाय पाप ॥ ल
ग्नान्नी मद्रुलाधिपतये सदासिवप्रेतासनाय पा
प ॥ वृषासनाय पाप ॥ सिंहासनाय पाप ॥ ध्यान ॥
वृषभे संलितं देवं रववक्ररूपसो भित्त ॥ यकवक

तंत्रिनेय सच द्वादसं भुजधारिणी ॥ भुमरूपरसुष
तं सवमं सवजकं सव यवे लवाय च वरद्वरदुदि
ने ॥ यो मेख द्वांग सुलय भलक चरुपासक ॥
कैठा कपालवेरुय अ भय भय नो सव ॥
पहे नव जोजा नु चामो रुखा च देवति य
कव गता विनेत्रा च अरुना वलवा जोजा ॥
धि भुजावरदादत सिंहाकार द्वा सुभा ॥
नाना लंकार से पुन लक्षन सर्व स युत ॥ भैर
वाने न्द रूपो यजे द्वा रुजे व प्रकिर्तता ॥
यव ध्यात्वा वरा रोह पाति धादि मानवा ॥

श्रीमूलस्थानसिबसंगतिध्यानपूर्वपाप॥
श्रीकृष्णकेश्वरश्रीकृष्णेश्वरिहाराधनैर॥
रत्नादिअवगुणतपंचमहामुद्रा॥ पाञ्चादि
उपचारपूजा॥ हृत्सहस्रनामार्थश्रीकृष्ण
केश्वरश्रीकृष्णकायेनमः॥ अथये॥ हृत्
सहस्रश्रीकृष्णकेश्वरश्रीकृष्णकायेचन्दन
नमः॥ रत्नादिपूर्वनमः॥ चयाजलि॥ हिथीमूह
स्पेहृत्श्रीमहाविद्यारत्नेश्वरिमुलस्थानसिब
संगतिभक्ताकायचयाजतिपूर्वपाप॥ ॥
रत्नैवभवलिगृध्रस्वाहा॥ अधीरवचकवाति

सिपूर्ववतपूजा॥ हृत्सहस्रश्रीमूलस्थानसिबसंगति
भक्ताकायचन्दनैवभवलिगृध्रस्वाहा॥ पंच
महामुद्रा॥ विदुः॥ इतिश्रीमूलस्थानपूजा॥
मुलयायन्दुपूजाश्रीमूलपूजाथे॥ ततश्चि
द्विलक्ष्मीपूजा॥ हृत्प्रेतासनायपाप॥ सिध्द
श्वरभदराकेपाप॥ उद्दीर्घहाहृद्दीकोनमः॥ श्रीसि
ध्विलक्ष्मीदेविश्रीपाप॥ वलि॥ हल्लमुद्रा॥ बाहु
॥ ततश्चिगृह्णकालिपूजा॥ स्पेइश्वरप्रेतासनाय
पाप॥ हृद्दीश्रीपाप॥ माहासिवास्तायपाप॥ हृद्दीपे
वपसपक्रीद्दीपेडाहृद्गृहेश्वरश्रीगृहेश्वरिका

लिपापु॥ ३॥ ॐ फेसिद्धि करालिडीदीइ स्त्रीफेनम
 स्वाहापापु॥ ३॥ देवलिगृध्र २ स्वाहा॥ योनिमुद्रा॥
 विन्दु॥ सिद्धिलक्ष्मीयायत्रपुजा॥ श्रीसिद्धिल
 क्ष्मीयाये॥ ततथीवृषसंधुरिपुजा॥ पंचप्रेता
 सनायपापु॥ यद्दी सोकीइ मू श्रीवृषसदृ
 मुद्रादेविपापु॥ ३॥ बलि॥ योनिमुद्रा
 विन्दु॥ ततोथीनिरवानपुजा॥ स्वेतपञ्चामना
 यपापु॥ जरासनायपापु॥ चकेकेतुव्यातीतमन
 लेकतिरजनकमलासनपापु॥ श्री श्री हस्ते ३ ह्मो
 श्रीमहानिर्वोने श्वरायनन्दनाठायशक्तिरीसग ती

सहितायसिद्धासर्वोधिकारे भवस्सोद्यपापु॥ ३॥
 रडंनैवप्रवलि॥ निर्वानमुद्राविन्दु॥ इतिनिर्वान॥
 ततद्वारपुजा॥ जहद्वारायपापु॥ बलि॥ वीडु॥ ज
 मद्वारेपापु॥ ३॥ बलिविन्दु॥ ततदुसालापुजा
 ॥ जवबलिसा॥ ततथीर्थथचपुजा॥ स्वाहा॥ नम
 हस्मायफत॥ ॐ ह्रीं हस्ताभ्यां नम॥ इहातर्जभ्यां
 स्वाहा॥ इमध्याभ्यां वषत॥ इत्यनाभिका
 भ्यां ३॥ कौंकनिष्ठाभ्यां वौषत॥ नमकारतरु
 याभ्यां हस्तायफत॥ यदंशुंगम्यास॥ पुजासि
 द्धिलक्ष्मीयाये॥ जतहसपुजा॥ जगत्पदासना

यपापु ॥ वृषासनायपापु ॥ मयुरसनायपापु
॥ जहाही कुंद आदिमा जम्भुमलवा जम्भु श्रीहरिसिद्धि
योगिनिपापु ॥ ३ ॥ बलि ॥ जहाही कुंद श्रीदोप
दिसगति संहितायपापु ॥ बलि ॥ नृगदामुद्रा
॥ विद्रु ॥ काकपुजा ॥ सवासनायपापु ॥ हृत् श्री
पिसाचिनेपापु ॥ ३ ॥ नृमुल्योनिमुद्रा ॥ विद्रु
॥ इवालयपुजा ॥ वृषासनायपापु ॥ नरासना
यपापु ॥ ~~हृत्~~ श्रीपिसाचनायायमद श्रीपीसाचि
कासगति संहिताय कुंद नृत्मेतायायमद श्री

नृत्यलक्ष्मीसगति संहितायपापु ॥ ३ ॥ बलि ॥
व्येनुत्रिसुलमुद्रा ॥ विद्रु ॥ श्रीदेगुलिपुजा ॥
गरुडासनायपापु वांवीवृक्षजम्भु श्रीवैद्यवीज
वेदवेदेवतायेपापु ॥ ३ ॥ बलि ॥ सेवमुद्रा ॥
विद्रु ॥ तन श्रीकोटरक्षपुजा ॥ ह्रीं हं हं यादिकर
ययु ॥ न्यास ॥ प्रेतासनायपापु ॥ ह्रीसीमुद्रा ह्रीं
व्यां श्रीबुद्ध श्रीकोतरक्षमहाभैरवाय श्री ~~व्यां~~ श्री
लिपुष्पापापु ॥ ३ ॥ बलि ॥ हायक्ये ॥ ह्रीं ह्रीं ह्रीं कोतर
क्षमहा महास्करा विपतये कोकी कुंबुद्र श्रीकोतर
क्षमहा क्षेत्रपालाय कपिलो ॥ नराभा ॥ भासु

रत्रिनेत्रकालामुषचतुर्जजकायखादभेतक
सुरपानयेमहाकपालभरभरसाविधनेरिसमप्र
भायत्रहिभगवनभैरव रूपेनाय थोपंपंतात्रव
लिगृध्रस्वाहा ॥ नम २ मर २ वष घाहि २ महा
मराधिपतयेममसाकिंकुह २ हामसेवउो
ममस्वाहा ॥ दन्दमुद्राविन्दु ॥ श्रीचंद्रभैरवपुजा
॥ सुकरासनायपाप ॥ चीं चींचूं चूं श्रीचंद्र महाभै
रवायत्रयाजालिपुष्पं पाप ॥ १ ॥ बलि ॥ त्रिगुलमुद्रा ॥
विन्दु ॥ श्रीबालकौमारीपुजा ॥ वां हृदयादिकरकांगः

कास ॥ मयुरासनायपाप ॥ वां वीं वूं चूं श्रीबालकौमा
रिदेवित्रयाजालिपुष्पं पाप ॥ १ ॥ बलि ॥ सगतिमुद्रा
॥ विद्रु ॥ ततोबलिमुले ॥ हां ही हूं हूं शेत्रपालाय
बलिगृध्रस्वाहा ॥ श्रीह्रीकुलपुत्रवतुकनाथाय ॥ गौं
गीगूगग्लोकल गने श्वराय ॥ धां सर्वयोगी निभ्यो ॥
६८ सिद्धि चामुद्राये ॥ सर्वभौभुतयेभ्यो

W. H. R. G. 1861